

25. प्रजाप्रेमी सम्राट्

उस दिन पुनर्वसु नक्षत्र था, यह प्रियदर्शी सम्राट् अशोक का जन्म नक्षत्र था। सभी प्रान्तों के शासन क्षेत्र उपस्थित हुए थे। सम्राट् ने घोषणा की थी कि 'सर्वश्रेष्ठ प्रान्तीय शासन' को इस वर्ष पुरस्कृत किया जाएगा। यह पुरस्कार अच्छी जनसेवा तथा व्यवस्था के मापदण्डों पर दिया जाना था।

राजसभा में जब सम्राट् सिंहसान पर आसीन हो गये, तो प्रान्तीय शासकों ने बारी-बारी से अपना कार्य-विवरण सुनाना प्रारम्भ किया। उत्तरी-सीमान्त के शासक ने तीन गुणा आय राजकोष के लिए एकत्र की थी। दक्षिण के शासक ने राजकोष के लिए इस वर्ष दुगुना स्वर्ण अर्पित किया था। पूर्व-प्रदेश के शासक ने अपने प्रान्त के उपद्रवी तत्त्वों को कुचल डाला था। एक अन्य प्रान्त के अधिपति ने प्रजा से अधिक कर वसूल किया था, सेवकों का व्यय कम किया था तथा राजकीय आय के दूसरे कई स्रोत ढूँढ निकाले थे। ये सब शासक अपने को एक दूसरे से अधिक कुशल समझकर पुरस्कार की आशा कर रहे थे।

अन्त में चुप बैठे मगध के प्रान्तीय शासक उठे। उन्होंने निवेदन किया- “मेरे प्रान्त ने गत वर्ष’ की अपेक्षा आधे से भी कम धन राजकीय कोष में दिया है, क्योंकि प्रजा का कर कम किया गया है। राजसेवकों की सुविधाएं कुछ बढ़ाई गई हैं। प्रान्त में अनेक स्थलों पर कुएं तथा धर्मशालाएं बनवायीं गई हैं। रोगियों के लिए चिकित्सालय तथा बालकों की शिक्षा के लिए पाठशालाएं खोली गई हैं।”

“इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ शासक मगध का प्रशासक है। वही ‘सर्वश्रेष्ठ प्रान्तीय प्रशासक’ का पुरस्कार पाने का अधिकारी है।” सम्राट् ने घोषणा की। “सब प्रान्तीय प्रशासक उनसे प्रेरणा ग्रहण करें। अशोक को प्रजा का शोषण करके प्राप्त स्वर्ण-राशि या धन नहीं चाहिए। प्रजा को सुख-सुविधाएं दी जाएं-यही मेरी इच्छा है।”

सारी सभा में इस निर्णय से हर्ष की लहर दौड़ गई। इस निर्णय से सभी संतुष्ट थे।

* अभ्यास *

1. सम्राट् अशोक ने प्रान्तीय प्रशासकों को किन गुणों के लिए पुरस्कृत करने की घोषणा की थी ?
2. मगध के प्रशासक को किस गुण के लिए पुरस्कृत किया गया ?
3. अशोक ने निर्णय देते हुए क्या शिक्षा दी ?

